Research Discourse (ISSN 2277-2014) : An International Peer-reviewed Refereed Research Journal, **Published by :** SARDI, Varanasi, U.P. (INDIA)
Indexed by : IIJIF, I2OR, SJIF, **IIJ Impact Factor :** 7.680, Vol. XV, No. III, July-September **2025,** Page No. : **46-48**
Received- 18/07/2025, Reviewed- 18/08/2025, Accepted- 20/08/2025

निम्ना विजय : आत्मविश्वास जगाने वाली उपन्यासकार

डॉ0 सांटी जोसफ*

*एसो0प्रो0, हिन्दी विभाग, सेंट एलॉयसियस कॉलेज, एडथुआ, अलाप्पुझा, केरल

सारांश : *निम्ना विजय द्वारा लिखित* ***"एट्टावम प्रियपेट्टा एन्नोडु"*** *नामक मलयालम उपन्यास की कहानी एक मध्यम वर्ग के परिवार की बेटी के जीवन के इर्द–गिर्द घूमती है, जो अपने परिवार और समाज के दबावों के बीच अपने सपनों और इच्छाओं को संतुलित करने की कोशिश करती है। इस उपन्यास में प्रणय एक महत्वपूर्ण विषय है। इस में प्रेम को एक शक्तिशाली और परिवर्तनकारी बल के रूप में दिखाया गया है, जो जीवन को बदलने और आत्म –खोज की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने में मदद करता है। उपन्यास प्रेम, संबंधों, और व्यक्तिगत विकास की कहानी बताता है। उपन्यास के मुख्य पात्रों में से एक है नायिका, जो अपने जीवन के विभिन्न पहलुओं को संतुलित करने की कोशिश करती है। इस उपन्यास में हम देख सकते है कि नायिका अपनी समस्याओं को पार कर स्वयं आत्माविश्वास से भरती है और अपने आसपास के लोगों के मन में भी आत्माविश्वास भरने की कोशिश करती है। और इस प्रयास में वह विजयी हो जाती है।*

मुख्य शब्द : *आत्म संदेह, आत्म –संवाद, आत्म –विश्वास, आत्म –सम्मान, आत्म –प्रेम, आत्म –निर्भर, व्यक्तिगत विजय आदि।*

प्रस्तावना : केरल भारत का एक दक्षिणी राज्य है, जो अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और साहित्यिक परंपरा के लिए जाना जाता है। केरल का साहित्य मलयालम भाषा में लिखा जाता है, जो एक समृद्ध और सुन्दर भाषा है, जो राज्य की आधिकारिक भाषा है। केरल के साहित्य में विभिन्न शैलियों और विषयों का समावेश है, जिनमें कविता, उपन्यास, कहानी, नाटक और निबंध शामिल हैं। केरल के साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं में जीवन के विभिन्न पहलुओं को उजागर किया है, जैसे कि प्रेम, सामाजिक न्याय, राजनीति, पर्यावरण, जातिवाद, लिंग समानता और श्रमिक अधिकार।

जीवन की बहुत छोटी–छोटी यादों के माध्यम से दूसरों के हृदय को छूने की इच्छा के साथ, निम्ना विजय ने **"एट्टावम प्रियपेट्टा एन्नोडु"** प्रकाशित की। ढ़ाई लाख से अधिक प्रतियों की बिक्री के साथ, इस पुस्तक ने, निम्ना को पाठकों के दिलों में एक विशेष स्थान दिलाया। उन्होंने कालीकट विश्वविद्यालय से पत्रकारिता में स्नातक की डिग्री प्राप्त की। हैदराबाद में एक बिजनेस जर्नलिस्ट के रूप में अपने करियर की शुरुआत की। इसके बाद मुंबई में कंटेंट ऑपरेटर के रूप में कार्य किया और बेंगलुरु के एक प्रतिष्ठित मीडिया संस्थान में सीनियर एसोसिएट के पद पर भी काम किया। वर्तमान में वह मुंबई के एक मीडिया संस्थान में तमिल–मलयालम म्यूजिक ऑपरेटर के रूप में कार्यरत हैं।

निम्ना विजय नई पीढ़ी की लेखिका हैं। उनकी लेखन शैली प्रेम, रोमांस और आत्म–खोज जैसे विषयों पर केंद्रित हैं, जो उन्हें मलयालम साहित्य के पाठकों के बीच एक पसंदीदा बनाती है। जिनमें से कुछ प्रमुख हैं– **एट्टावम प्रियपेट्टा एन्नोडु** (सबसे प्यारे मेरे लिए), और ननयुवान नजान कडलाकून्नू (मैं समुद्र बन जाता हूं, भीगने के लिए) "**सबसे प्यारे मेरे लिए"** यह शीर्षक एक गहरी भावनात्मक कहानी की और संकेत करता है, जिसमें प्रेम सम्बन्ध और आत्मीयता के विभिन्न पहलुओं का अन्वेषण किया जा सकता है।

कथानक का सारांश : निम्ना विजय द्वारा लिखित **"एट्टावम प्रियपेट्टा एन्नोडु"** नामक उपन्यास की मुख्य पात्र का नाम "अतिथि" है, जिसे उसके घरवाले और करीबी लोग प्यार से "अम्मू" कहकर बुलाते हैं। अतिथि बेंगलुरु में एक ऑनलाइन न्यूज चौनल में नौकरी ज्वाइन करने के लिए केरल से ट्रैन पकड़ती है। बेंगलुरु पहुंचकर अंकल उसे स्टेशन से लेकर गए। फ्लैट पर पहुँचकर उसने खाना खाया। उसके बाद आंटी और शालू ने मिलकर उसे हॉस्टल में छोड़ दिया। हॉस्टल में साक्षी नाम की एक लड़की उसकी रूममेट थी। वहीं देविका और अश्विनी नामक लड़कियां उसकी दोस्त बन गयी। ऑफिस में अतिथि की मुलाकात आदित्य नामक एक मलयाली लड़के से हुई, जो ग्राफिक विभाग में काम करता था। उनकी दोस्ती छोटी–छोटी बातों और मजाकों के साथ उपन्यास भर में चलती रहती है। अतिथि को नियमित रूप से डायरी लिखने की आदत थी। वह अपनी डायरी में "महादेवन" नाम के एक अदृश्य मित्र को सम्बोधित करके अपने जीवन की बातें लिखती थी। एक दिन वह आदित्य के साथ चाय पीने के लिए टी–शॉप में गयी, जहां वह डायरी भूल गयी। वह डायरी शरण वासुदेवन के हाथ लग गयी, और बाद में दोनों दोस्त बन गए। जैसे–जैसे उनकी दोस्ती बढ़ी, वे एक–दूसरे के इतने करीब आ गए कि उन्होंने शादी करने के बारे में भी सोचना शुरू किया। लेकिन कुछ पारिवारिक समस्याओं के कारण अतिथि को केरल लौटना पड़ा। जब वह वापस आई, तो उसे पता चला कि शरण की सगाई हो चुकी है। यह जानकर अतिथि ने नींद की गोलियां खाकर आत्महत्या करने की कोशिश की। लेकिन वह मृत्यु से बच गयी और कोलकाता में नई नौकरी ज्वाइन कर ली। उपन्यास का अंत इस आत्मबोध के साथ होता है कि अब अतिथि के पास केवल वह खुद ही है –और कोई नहीं लेकिन वह हारने के लिए तैयार नहीं है। वह ओर भी बोल्ड बन जाती है। इस उपन्यास में आत्म–संवाद को एक सशक्त उपकरण बनती हैं। ताकि व्यक्ति खुद का सबसे अच्छा मित्र बन सके।

"हम कितनी बार आईने में देखते हैं और आलोचक की बजाय एक दोस्त को देखते हैं ?" यह पंक्ति आत्म –स्वीकृति हुए स्व–प्रेम की खोज को दर्शाती है– अतिथि आईने में आलोचना की जगह दोस्ती की तलाश कर रही है। यह केवल एक उपन्यास नहीं है। यह एक लम्बा, दिल से लिखा गया पात्र है। एक आईना है। अपने अतीत, अपने सशक्त हो रही आत्मा और अपने भविष्य स्व के साथ एक गर्मजोशी भरी बातचीत–एक साथ ।

कथानक की विशेषताएं : आत्मविश्वाश एक ऐसी मानसिक स्थिति है जिसमें व्यक्ति अपने आप पर, अपनी क्षमताओं और अपने निर्णयों पर पूरा भरोसा रखता है। यह एक महत्वपूर्ण गुण है जो व्यक्ति को अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने और जीवन में सफलता प्राप्त करने में मदद करता है। नायिका एक सच्चे प्रेम और साथी की तलाश में है, जो उसे समझता है और उसका समर्थन करता है। शरण वासुदेव की भूमिका पहले एक नायक की तरह सामने आती है, लेकिन अंत में वही चरित्र एक खलनायक का रूप ले लेता है। पहले प्रेम में विफल होकर टूट चुकी अतिथि को उस अंधेरे से बाहर निकालने में शरण सफल होता है। छोटे–छोटे

पिकनिक के पलों में पनपती उनकी पहचान धीरे–धीरे प्रेम में बदल जाती है। जब वे इस रिश्ते को विवाह जैसे पवित्र बंधन तक ले जाने का निर्णय लेते हैं, तभी भाग्य उन्हें सदा के लिए एक–दूसरे से जुदा कर देता है। पारिवारिक समस्याओं के कारण अतिथि को गांव लौटना पड़ता है, और जब वह वापस आती है, तब तक शरण अपने परिवार के दबाव में आकर किसी और से विवाह कर चुका होता है। अंत में, अतिथि बेंगलुरु की नौकरी छोड़कर कोलकाता में एक नई शुरुआत करने का निर्णय लेती है। अतिथि अपनी नौकरी छोटकर यहां से कोलकाता जा रही है। यह जानकर शरण बहुत दुखी हो जाता है और उसे देखने के लिए हॉस्टल पहुँचता है। शरण उससे माफी मांगता है। तब अतिथि आत्मविश्वास से कहती है कि "भले ही तुम इसके लायक न हो, पर मैंने तुम्हें मन से माफ कर दिया है। मुझे अपने लिए आगे बढ़ना ही होगा।"[1] शरण अपनी विवशता जाहिर करने की कोशिश करता है, तब वह अस्मिता भरी शब्दों में कहती है कि ''हम ऐसे दो लोग बनकर बिछुट जाते हैं जो एक दूसरे से बहुत प्यार करते हैं, पर अब कभी मिलना नहीं चाहेंगे।''[2]

नायिका की एक अच्छी दोस्त है जिसका नाम लया है। नायिका और लया के बीच एक मजबूत और विश्वासपूर्ण संबंध है, जो उनके जीवन में एक महत्वपूर्ण समर्थन प्रदान करता है। शरण के साथ होने वाले ब्रेकअप के बारे में चर्चा करते वक्त वह अपने आत्मीय मित्र लया से कहती है कि "मेरे कहने का मतलब यह नहीं है कि मुझे कोई समस्या नहीं है। लेकिन जहां में घायल हुआ हूँ, वही जगह मेरे घाव को सूखने के लिए उपयुक्त नहीं है। मुझे यह सपना नहीं है कि मेरे रिश्तेदार मुझे जरूर प्यार करेंगे या मेरी बात मानेंगे। मैं समझ गया हूं कि मैं उनके विचारों के साथ नहीं जी सकता। मैं अपने विचारों और सपनों के साथ आगे बढ़ना चाहती हूँ।"[3]

हॉस्टल से परिचित होने वाली एक मित्र है देविका, जो एक मलयाली भी है। देविका अमल नामक एक लड़के से प्यार करती है। आगे चलकर अतिथि और रूममेट साक्षी, देविका को समझाती है की अमल बहुत पोस्सेस्सिव(अधिकार जताने वाला) नेचरवाला है और फ्रॉड (धोखेबाज) भी है। देविका को जबर्दस्ती शारीरिक सम्बन्ध बनाने के लिए मजबूर करता है। अंत में देविका को भी समझ आ जाता है कि वह फ्रॉड है। एक बार देविका कक्षा में पढ़ते हुए दूसरे लड़के के साथ बाइक में यात्रा करती है। यह देखकर अमल को गुस्सा आ गया और उसने देविका को मारा देविका हॉस्टल में पहुंचकर रोती है तब अमल फोन करता है। साक्षी नामक रूममेट जो बहुत स्टारइत फॉरवर्ड (स्पष्टवादी) है और बोल्ड भी है, वह फोन उठाकर अमल से ऐसे कहती है कि ''तुम्हारे पास कोई बहाना नहीं है, कुछ भी नहीं है। तुम कौन होते हो उस पर हाथ उठानेवाले ? वह तुम्हारे गुस्से और हताशा को निकलने का जरिया नहीं है।[3] आज के बाद उसके फोन पर कभी फोन मत करना।''[4]

जबरदस्ती शारीरिक सम्बन्ध बनाने के बाद देविका अमल से अलग हो जाने का प्रयास करती है। तब अमल इस सबंध को आगे बढ़ाने के लिए मजबूर करता है और उसे सभी प्राइवेट तस्वीरे सोशल मीडिया में फॉरवर्ड करने की धमकी भी देता है। वह पढ़ना बंध करके घर में लौट जाने के बारे में सोचती है।'' तुम इतनी मेहनत करके और पैसा खर्च करके यहां पढ़ने आए हो। न कि उससे डरकर छिपने के लिए।''[5] देविका डर जाती है। तब अतिथी उसमें आत्मविश्वास जगाने के लिए इस प्रकार कहती है कि ''तुम्हारा शरीर, तुम्हारी पसंद। अंततः तुमको यह तय करने का अधिकार है कि क्या, कब और कहाँ कार्य करनी है।''[6] अंत में देविका सब बातें समझ जाती है और आत्मविश्वास के साथ इस सम्बन्ध से बाहर आने का निर्णय भी लेती है। ''हाँ दीदी, वह कुछ भी कहे, मै नहीं मानूंगी।''[7] और अमल से ऐसे कहती है कि "तुम से डरकर जीने से बेहतर है कि इन समस्याओं का सामना इज्जत के साथ किया जाए।"[8]

अतिथि व्यक्तिगत स्वतंत्रता चाहती है, जिसमें वह अपने निर्णय लेने और अपने जीवन को अपने तरीके से जीने की स्वतंत्रता चाहती है। "मुझे समझ नहीं आता कि सबको खुश करने की कोशिश में खुद को नष्ट करके जीने का क्या अर्थ है। अगर मुझे समसझने की जहमत नहीं उठानी है, तो मुझे अब परिवारवालों के स्नेह की आवश्यकता नहीं है। अब मैं खुद तय करूंगा कि मेरे जीवन में क्या होना चाहिए।"[9]

दफ्तरी दोस्त गीतू, अपनी नौकरी से व्यक्तिगत संतुष्टि प्राप्त करती है, जो उसके आत्मविश्वास और आत्म–सम्मान को बढ़ाती है। उसको अपने काम और जीवन के बीच संतुलन बनाए रखने की चुनौती का सामना करना पड़ता है। समाज और घर की उपेक्षायें और दबाव उसके लिए एक चुनौती हो सकते हैं, खासकर जब वह एक कामकाजी नारी के रूप में अपनी पहचान बनाने की कोशिश करती है। ''क्या सही होगा ? कुछ भी सही नहीं होगा। अगर मैं एक बच्चे को जन्म देकर घर पर बैठूँ, तो सबको खुशी मिलेगी। लेकिन मेरा उसके लिए मन नहीं है।''[10]

इसी कहानी के साथ जुड़ते हैं शालू और उसकी आंटी जैसे दबे–कुचले जीवन, बैंगलोर में रहने वाली आंटी की शादी परिवारवालों ने कर दी है। भारत में माता–पिता सोचते है कि लड़कियों की जिंदगी में शादी ही सबसे बड़ी बात है। लड़की को जीवन साथी के हाथ में सौपने के बाद माता–पिता का कर्तव्य पूरा हो जाता है। अंकल बहुत मेहनती है। वह बैंगलोर में आकर जॉब करके एक घर खरीदते है। इसलिए लोग सोचते हैं कि वह बहुत सामर्थ्यवान है। वास्तव में, वह आंटी को शारीरिक और मानसिक रूप से पीड़ा देते हैं। यह समझकर नायिका उसे सांत्वना देती है। "आंटी, आप यह सब क्यों सह रही हैं ?आप उनसे तलाक ले सकती है।''[11] मैं आपके साथ हूँ आंटी। तलाक आपके जीवन का अब तक का सबसे बेहतरीन फैसला।''[12] और साथ ही एक समलैंगिक रिश्ते में जी रहे उनके रिश्तेदार कन्नन की पीड़ा भी। ''नहीं मैं उसे धोखा नहीं दूँगी। उसने मुझ पर भरोसा करके ही वहां से गई है।''[13]

आधुनिक सोच और संवेदनशीलता से भरी अतिथि, जितना संभव हो सके, इन सभी के जीवन में उम्मीद और सहारा बनने की कोशिश करती है। इस प्रकार निम्ना विजय अपने उपन्यास के माध्यम से आत्माविश्वास से भरी अनेक स्त्री पात्रों का– अतिथि, देविका, गीतू, आंटी जैसे– परिचय कराती है। वचन के बाद पाठकों को आईने के सामने खड़े होकर, अपने भीतर झांककर, आत्म प्रेम और आत्मविश्वास हासिल करने की प्रेरणा मिलती है।

निष्कर्ष : अधिकांश प्रेम कहानियों में हम एक ही दिनचर्या देखते है यह लड़का–लड़की से मिलता है, वे प्रेम में पड़ते हैं, और कुछ समय तक सब कुछ सहजता से चलता है। हालाँकि एक संकट अंततः उत्पन्न होता है, जिसके कारण वे अलग हो जाते हैं और कुछ समय तक दुखी रहते हैं। ब्रेकप के बाद, वे आगे बढ़ते हैं और नए साथी ढूंढ़ते हैं, वही पैटर्न दोहराते हुए। निम्ना विजय के उपन्यास में भी यही थीम है, लेकिन उनकी अनोखी कहानी कहने की शैली इसे अलग बनाती है और पाठकों को मोहित करती है,

जो इस उपन्यास को मलयालम साहित्य में एक सर्वश्रेष्ठ विक्रेता बनती है। यह उपन्यास पाठकों को अपने जीवन के विभिन्न पहलुओं को संतुलित करने और अपने सपनों को पूरा करने के लिए प्रेरित करता है। उपन्यास का संदेश प्रेरणादायक है, जो पाठकों को अपने जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए प्रेरित करता है। 'अगर आपसे कहा जाए कि अपने सबसे पसंदीदा कुछ लोगों के नाम बताइए, तो कितने नामों के बाद हम अपने बारे में सोचते हैं? हम अभी भी यह कह पाने में सक्षम नहीं होते कि मुझे खुद से सबसे ज़्यादा प्यार है। जहाँ हम ऐसा कह पाने लगते हैं, जहाँ हम खुद को अपनाकर थामते हैं, वहीं से असल में जिंदगी बदलना शुरू होती है। ऐसी ही एक सच्चाई की ओर बढ़ने वाली यात्रा है यह उपन्यास। जिंदगी की तमाम भावनाओं से गुजरती इस यात्रा के अंत में, जब आप यह पहचानते हैं कि मुझे सबसे ज्यादा प्यार खुद से है– वहीं पर यह उपन्यास पूर्ण होता है।'[14]

चाहे, हमारे चारों ओर कितने ही अपने क्यों न हों, चाहे रिश्तों की गहराइयाँ कितनी भी सघन क्यों न लगें– अंततः हम बस अपने ही होकर रह जाते हैं। यही गूढ़ सच्चाई हमें इस उपन्यास की पंक्तियों से भीतर तक छू जाती है। उपन्यास पढ़ने के बाद लोग अपनी और से, हृदय की गहराइयों से देखते हैं और स्वयं से प्यार करने की कोशिश करते हैं।

सन्दर्भ :

1. विजय, निम्ना, अप्रैल 2023, एट्टावम प्रियपेट्टा एन्नोडु, उपन्यास, मैनकाइंड पुब्लिकेशन्स, कालीकट, केरल, पृ0. 212
2. वही पृ0 213
3. वही पृ0 206
4. वही पृ0. 165
5. वही पृ0 178
6. वही पृ0 193
7. वही पृ0 193
8. वही, पृ0 193
9. वही, पृ0 206
10. वही, पृ0 134
11. वही, पृ0 65
12. वही, पृ0 147
13. वही, पृ0 197
14. वही, कवर पेज से